मृच्छकटिक

Name :- Soni kumari
Class :- B.A II year
Deptt :- Sanskrit

प्र :- मृच्छकटिक प्रकरण के रूप में रूपक का एक भेद है

उ :- संस्कृत साहित्य में दृश्य काव्यों को दो भागों में विभक्त किया गया है — रूपक और उपरूपक। रूपक के 10 प्रकार बताए गए हैं। नाटक, प्रकरण, भाण, प्रहसन, डिम, व्यायोग, समवकार, वीथी, अंक और ईहामृग — ये दस रूपक हैं। जिसमें से दूसरे स्थान पर प्रकरण है। धनञ्जय और विश्वनाथ ने प्रकरण का लक्षण इस प्रकार बताया है —

"भवेत् प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम् ।
शृङ्गारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक् ॥
सापायधर्मकामार्थपरो धीरप्रशान्तकः ।
नायिका कुलजा, क्वापि वेश्या क्वापि क्वचिद् द्वयम्
तेन भेदास्त्रयस्तस्य तत्र भेदस्तृतीयकः ।
कितवद्यूतकारादिविटचेटकसङ्कुलः ॥ — साहित्यदर्पण

अर्थात् "प्रकरण रूपक का एक भेद है। इसमें वृत्त लौकिक तथा कविकल्पित होता है। शृंगार मुख्य रस होता है, ब्राह्मण, अमात्य या वणिक में से कोई एक नायक होता है। वह नायक धीर-प्रशान्त होता है तथा विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म, अर्थ, काम में परायण होता है। प्रकरण की नायिका कुलस्त्री या वेश्या होती है। किसी प्रकरण में कुलस्त्री तथा

वेश्या दोनों ही नायिका रूप में दिखाई जाती है। इन नायिकाओं की विविधता से प्रकरण के भी तीन भेद हो जाते हैं। इन तीनों प्रकरण-भेदों में तीसरा जो प्रकरण है (जिसमें कुलजा तथा वेश्या दोनों नायिका होती हैं) वह धूर्त, जुआरी, विट, चेट आदि से भरा होता है। (यह प्रकरण नाटक का ही एक परिवर्तित रूप है अतः शेष सन्धि प्रवेशक आदि नाटक के ही समान होते हैं)।"

मृच्छकटिक एक नाटक नहीं प्रकरण है

मृच्छकटिक का कथानक ऐतिहासिक नहीं बल्कि लोकाश्रित और कविकल्पित है। इसका नायक चारुदत्त ब्राह्मण है जो कि दरिद्रता की अवस्था में है तथापि धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि में तत्पर दिखाई देता है। चारुदत्त को उसकी दरिद्रता असहनीय पीड़ा सा प्रतीत होता है—

दारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्।
अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्॥

इसमें दो नायिकाएं हैं— एक धूता, जो कुलस्त्री है, और दूसरी वसन्तसेना जो गणिका है। वसन्तसेना उज्जयिनी की एक वैभवशालिनी गणिका है। उसकी समृद्धि को देखकर विदूषक कह उठता है—

'किं तावद् गणिकागृहम् अथवा कुबेर-भवन-परिच्छेदं इति।'

~~वह चारुदत्त से प्रेम~~

इसका चारुदत्त के प्रति प्रेम धन के लिए नहीं अपितु प्रशंसनीय प्रेम है — दरिद्रपुरुषसंक्रान्तमनाः खलु गणिका लोकेऽवचनीया भवति।'

धूता चारुदत्त की विवाहिता पत्नी है। जो भारतीय पतिव्रता नारी का एक ज्वलन्त उदाहरण है।

इस प्रकार दोनो प्रकार की नायिका होने से यह तीसरे प्रकार का प्रकरण है। इसमें धूर्त द्यूतकर, विट, चेट, शकार आदि की भी योजना की गई है। इसका प्रधान रस शृङ्गार है, करुणा, हास्य (विदूषक और शकार की उक्तियों में) तथा वीभत्स इत्यादि शृङ्गार के अङ्ग रूप में आये हैं। इसमें कुल 10 अंक हैं।

मृच्छकटिक में लक्षण ग्रन्थों के नियमों का पूर्णतया पालन नहीं किया गया है। कारण यह है कि मृच्छकटिक के निर्माण काल में नाट्य के ये नियम भली-भाँति निर्धारित नहीं किये जा सके थे, जब अनेक नाटक रचे जा चुके तब इनके आधार पर नाट्य के नियमों का निर्माण किया गया और उन्हें साहित्यिक रूप दे दिया गया। अतः मृच्छकटिक जैसी अत्यन्त प्राचीन रचना में उन सभी नियमो के पालन की संभावना कैसे की जा सकती है? फलतः यहाँ प्रकरण की कतिपय विशेषताऐं नहीं भी मिलती:—

① साहित्यदर्पण के अनुसार ~~प्रकारण~~ प्रकरण का नाम नायक और नायिका के नाम पर होना चाहिए,

~~वह चारुदत्त से~~ प्रेम

उसका चारुदत्त के प्रति प्रेम धन के लिए नहीं अपितु प्रशंसनीय प्रेम है — दरिद्रपुरुषसंक्रान्तमनाः खलु गणिका लोकेऽवचनीया भवति।'

धूता चारुदत्त की विवाहिता पत्नी है। जो भारतीय पतिव्रता नारी का एक ज्वलन्त उदाहरण है।

इस प्रकार दोनो प्रकार की नायिका होने से यह तीसरे प्रकार का प्रकरण है। इसमें धूर्त द्यूतकार, विट, चेट, शकार आदि की भी योजना की गई है। इसका प्रधान रस श्रृङ्गार है, करुणा, हास्य (विदूषक और शकार की उक्तियों में) तथा वीभत्स इत्यादि श्रृङ्गार के अङ्ग रूप में आये है। इसमें कुल 10 अंक है।

मृच्छकटिक में लक्षण ग्रन्थों के नियमों का पूर्णतया पालन नहीं किया गया है। कारण यह है कि मृच्छकटिक के निर्माण काल में नाट्य के ये नियम भली-भाँति निर्धारित नहीं किये जा सके थे, जब अनेक नाटक रचे जा चुके तब इनके आधार पर नाट्य के नियमों का निर्माण किया गया और उन्हें साहित्यिक रूप दे दिया गया। अतः मृच्छकटिक जैसी अत्यन्त प्राचीन रचना में उन सभी नियमो के पालन की संभावना कैसे की जा सकती है? फलतः वहाँ प्रकरण की कतिपय विशेषताऐं नही भी मिलती :—

1. साहित्यदर्पण के अनुसार ~~प्रकरण~~ प्रकरण का नाम नायक और नायिका के नाम पर होना चाहिए,

(2) दशरूपक के अनुसार नायक प्रत्येक अङ्क में उपस्थित रहना चाहिए — प्रत्यक्षनेतृचरितः, किन्तु यहाँ चारुदत्त सभी अंकों में उपस्थित नहीं है। (3) नाट्यशास्त्र तथा दशरूपक के अनुसार कुलस्त्री और वेश्या दोनों का रङ्गमञ्च पर मिलन नहीं होना चाहिए, किन्तु यहाँ धूता और वसन्तसेना दोनों रङ्गमञ्च पर केवल मिलती ही नहीं अपितु एक दूसरी का स्वागत करती हैं। इन अनियमितताओं के अनेक कारण हो सकते हैं तथापि इनके होने में वैमत्य नहीं हो सकता। फिर भी साहित्य मर्मज्ञों को 'संकीर्ण प्रकरण' का मृच्छकटिक से अन्य कोई उपयुक्त उदाहरण नहीं मिलता. इसमें कोई सन्देह नहीं। अतः मृच्छकटिक संकीर्णप्रकरण के रूप में ~~दर्शनीय~~ अत्यन्त मनोहर लोकप्रिय एवं दर्शनीय है।